समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Thursday, 24 September 2026

यूपी पंचायत चुनाव से दूर रहेगी सपा, विधानसभा चुनाव पर फोकस करने का शिवपाल यादव का संकेत

Publisher

Published on 15 Sep 2025

उत्तर प्रदेश की राजनीति में हलचल मचाते हुए **समाजवादी पार्टी (सपा)** ने संकेत दिया है कि वह आगामी **पंचायत चुनाव** में हिस्सा नहीं लेगी।

पार्टी के वरिष्ठ नेता **शिवपाल सिंह यादव** ने यह ऐलान करते हुए स्पष्ट किया कि सपा अब अपनी पूरी ताक़त और ऊर्जा आगामी **2027 विधानसभा चुनाव** पर केंद्रित करेगी।

यह फैसला सपा की चुनावी रणनीति में बड़े बदलाव का संकेत है, क्योंकि परंपरागत रूप से पंचायत चुनावों को पार्टी संगठन की जमीनी मजबूती से जोड़कर देखा जाता है।

एक जनसभा को संबोधित करते हुए शिवपाल यादव ने कहा:

> “समाजवादी पार्टी अब पंचायत चुनाव में भाग नहीं लेगी। हमारा पूरा फोकस विधानसभा चुनाव पर है। हमें जनता को जोड़ना है और संगठन को मजबूत करना है।”

उन्होंने यह भी कहा कि पार्टी नेतृत्व अब छोटे चुनावों में ऊर्जा खर्च करने के बजाय **राज्य स्तर पर सत्ता परिवर्तन की तैयारी** में जुटा है।

विशेषज्ञ मानते हैं कि सपा का यह कदम कई रणनीतिक कारणों से जुड़ा है:

1. पंचायत चुनाव में सीधे पार्टी चिन्ह पर चुनाव न होने के कारण कई बार सपा को **राजनीतिक लाभ नहीं मिल पाता।**
2. पार्टी का मानना है कि इन चुनावों में **स्थानीय समीकरण और व्यक्ति आधारित राजनीति** हावी रहती है, जिससे बड़े स्तर

पर पार्टी की छवि को फायदा नहीं होता।

3. सपा का मकसद है कि संगठन और कार्यकर्ता अब विधानसभा चुनाव की तैयारी में पूरी तरह **एकजुट होकर** लगें।

अपने संबोधन में शिवपाल यादव ने भाजपा सरकार पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि भाजपा की नीतियों से प्रदेश में **बेरोज़गारी और महंगाई** चरम पर है। किसानों को उनकी फसलों का उचित दाम नहीं मिल रहा और नौजवान पलायन के लिए मजबूर हैं।
उन्होंने जनता से अपील की कि आने वाले विधानसभा चुनाव में सपा को सत्ता में लाकर भाजपा को जवाब दें।

उत्तर प्रदेश जैसे विशाल राज्य में पंचायत चुनाव केवल ग्रामीण स्तर का चुनाव नहीं बल्कि **राजनीतिक नर्सरी** माने जाते हैं। पंचायत चुनावों से ही कई नेता आगे बढ़कर विधानसभा और लोकसभा तक पहुँचते हैं। सपा ने पिछले चुनावों में पंचायत स्तर पर कई सीटें जीती थीं, जिससे उसका ग्रामीण आधार मजबूत हुआ था। लेकिन इस बार पंचायत चुनावों से दूरी बनाने का फैसला पार्टी की **लंबी रणनीति** का हिस्सा माना जा रहा है।

सपा का कहना है कि पंचायत चुनावों से दूर रहकर पार्टी अब गांव-गांव जाकर संगठन को और मजबूत करेगी। बूथ स्तर पर कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी तय की जाएगी। किसान, मजदूर और युवा वर्ग को जोड़ने पर विशेष अभियान चलाया जाएगा। भाजपा के खिलाफ माहौल बनाने के लिए प्रदेशव्यापी **संघर्ष यात्रा** की भी योजना है।

सपा के इस फैसले का असर प्रदेश की विपक्षी राजनीति पर भी पड़ेगा। कांग्रेस और बसपा पंचायत चुनावों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की कोशिश करेंगी। भाजपा को भी उम्मीद है कि सपा की गैरमौजूदगी से उसे ग्रामीण इलाकों में और मजबूत पकड़ बनाने का मौका मिलेगा।

विशेषज्ञों का मानना है कि यह रणनीति अगर सफल रही तो सपा विधानसभा चुनाव में भाजपा को कड़ी चुनौती दे सकती है, लेकिन यदि पंचायत चुनावों से दूरी के कारण संगठन कमजोर हुआ तो इसका नुकसान भी उठाना पड़ सकता है।

समाजवादी पार्टी का पंचायत चुनावों से दूरी बनाने का फैसला निश्चित तौर पर **राजनीतिक चर्चाओं का केंद्र** बन गया है।
शिवपाल यादव के बयान ने साफ कर दिया है कि सपा अब विधानसभा चुनाव 2027 पर पूरा ध्यान देगी।
यह कदम पार्टी की चुनावी रणनीति में बदलाव का संकेत है और आने वाले समय में इसके नतीजे प्रदेश की राजनीति की दिशा तय कर सकते हैं।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.